भ्रष्टाचार के खिलाफ औरतों की लड़ाई

सुवाणा गांव में सूखा राहत का काम तालाब पर चल रहा था। वहां काम करने वाली कई औरतें महिला विकास बैठकों में जातीं। 'मेट' ने उनसे 10-10 रु. यह कह कर मांगे कि वह उनकी मज़दूरी की दर बढ़वाएगा। उन्हें यह बात अच्छी नहीं लगी, पर विरोध करने की उनकी हिम्मत नहीं हुई। 'मेट' ने कहा था कि वह यह रुपया सरपंच और ओवरसियर को जाकर देगा। वह उन लोगों के काम का समय बढ़ा कर लिख देगा और उन्हें ज़्यादा मज़दूरी मिल जाएगी।

यह बात जब 'ग्राम साथिन' को पता लगी तो उसने परियोजना निदेशक और प्रचेता को बताई। तब एक योजना बनाई गई। साथिन वहां कंडे चुगने के बहाने जाएगी जिससे किसी को शक न हो। एक औरत को उन्होंने सच्ची बात कहने के लिए तैयार कर लिया।

योजना अनुसार निदेशक, साथिन और प्रचेता वहां पहुंचे। उन्होंने मजदूरिनों से जानकारी मांगी तो उन्होंने इंकार कर दिया और कहा कि उन्होंने कोई रुपया नहीं दिया। इस पर परियोजना निदेशक ने साथिन को डांटना शुरू कर दिया कि उसने झूठी शिकायत क्यों की।

साथिन से कहा कि "आज से तुम्हें साथिन के पद से हटाया जाता है।" यह सुनकर मजदूर औरतों ने विचारा कि यह बहुत गलत हो रहा है। साथिन तो उनके भले के लिए ही काम करती है।

इसी बीच 'मेट' गांव जाकर सरपंच को बुला लाया। उनके इशारे पर निदेशक की गाड़ी पर पत्थर फेंके गए। मज़दूर औरतों को बुरा-भला कहा गया। फिर भी निदेशक, प्रचेता और साथिन अडिग रहे। क्लक्टर को पत्र लिखकर उनसे कार्यवाही करना तय हुआ। इसी बीच 'मेट' रुपये लेकर आ गया और बोला "इन्हें लौटा दीजिए, हमसे गलती हो गई। हमें माफ कर दीजिए।" परियोजना निदेशक ने रुपये लेने से इंकार कर दिया और कहा कि फैसला अधिकारी करेगें। सबके बयान लिए गए। थाने में प्रथम सूचना रपट लिखाई गई और अपराधी गिरफ्तार किए गए।

महिला समूह की इस कार्यवाही से घबरा कर चौथे दिन संबंधित लोगों ने रुपया मजदूरिनों में बांट दिया। जांच अधिकारियों से कहा गया कि रकम पहले वसूल की गई थी, लेकिन इस घटना के बाद लौटा दी गई। संगठित प्रयास से रिश्वत में दिया पैसा वापिस मिल गया और अपराधियों को सज़ा मिली। इस घटना का असर आसपास चल रहे राहत कार्यों पर भी पड़ा।

पंचायत समिति सुवाणा
भीलवाड़ा (राजस्थान)

□